401 P
H 69

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1527/NAI

आह्वानांक Call No. ____________

अवाप्ति सं० Acc. No. 401

1811

108

॥ वन्दे मातरम् ॥

गांधी-गौरव-गान

IMPERIAL REC... DEPARTMENT
RECEIVED
30 MAR 1931

प्रकाशक—

रामनारायण वर्म्मा

लाला नन्दलाल गुप्त के प्रबन्ध से
शिवल प्रिंटिंग वर्क्स बरेली
में छापा।

मूल्य -)

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
NO 401
Date 9.12.71
GOVT. OF INDIA
891.431
G151G

कमरबस्ता दिलोजां से अगर हर नौजवां होगा
गुलामी से रिहा क्यों न फिर हिन्दोस्तां होगा
ज़रा इन माडरेटों को असहयोगी तो होने दो
यहां से ज़ालिमो का तब रवाना कारवां होगा
अगर हम गुलशने भारत लहू से अपने सीचेंगे
बहार आजायेगी बेशक न फिर खौफ़े खिज़ां होगा
पिन्हादे बेड़ियां ज़ालिम बदन में कसदे जंजीरें
तराना हुब्बे-क़ौमी का मगर विर्दे ज़वां होगा
मज़ा आयेगा जिन्नत का तुझे दीवानये क़ौमी
किसी दिन जेलखाने से अगर तू मेहरवां होगा
न करना शिकवये वायदा ऐ बुलबुल असीरी में
अगर इशक़ सच्चा तो क़फ़स भी आशियां होगा

दुनिया से गुलामी का मैं नाम मिटा दूंगा
एक बार ज़माने को आज़ाद बना दूंगा

बेचारे ग़रीबों से नफरत है जिन्हें यक दिन
मैं उनकी अमीरी को मिट्टी में मिला दूंगा
यह फ़ज़्ले इलाही से आया है ज़माना वह
दुनियां की दग़ावजी दुनियां से उठा दूंगा
ऐ प्यारो ग़रीबो तुम घबराओ नहीं दिल में
हक़ तुमको तुम्हारे मैं दो दिन में दिला दूंगा
बन्दे हैं खुदा के सब हम सब के बराबर हैं
ज़र और मुफ़लिसी का झगड़ा ही मिटा दूंगा
जो लोग गरीबों पर करतें हैं सितम नाहक
गर दम है मेरा क़ायम गिन २ के सज़ा दूंगा
हिम्मत को ज़रा बांधो डरते हो ग़रीबो क्यों
शैतानी क़िले में अब मैं आग लगा दूंगा
ऐ सरयू यकीं रखना है मेरा सखुन सच्चा
कहता हूं ज़बां से जो अब करके दिखा दूंगा

कलामे त्रिशूल

जिगर में हुये जख़्म आले हुये हैं,
कि छिल २ के अब जख्म छाले हुए हैं

हुई भीड़ दिल में है वह हसरतों के,
किघुट २ के बाहर यह नाले हुये हैं
जिन्हें दूध कल तक पिलातेर हे हम
वही आज डसने को काले हुये हैं
ज़रा देखिये क्या २ चालें हैं चलते
किस उस्ताद के यह निकाले हुये है
मेरे दिलके अरमान सुनकर वो बोले
बड़े आप अरमान वाले हुये हैं
त्रिशूल शूलों की है तरक्की,
सुई जो थे पहिले वह भाले हुए हैं

मिट्टी उसी कम्बख़्त ने बरबाद की
कर सके तारीफ़ क्या जालिम तेरे बेदाद की
कौन सुनता है सदा अब आश्के नाशाद की
कर चुके मक़तल में आंखें ही दिखाकर क़त्ल वह
दे गई है काम ख़ंजर का नज़र जल्लाद की

छोड़ दो ऐ हिन्द वालों ग़ैर कपड़े छोड़ दो
सनअतो हिरफत उन्होंने हिन्द की बरबाद की
खाते हैं बे इज्ज़ती से ठोकरें हरजा गुलाम
आबरू है चश्म आलम में फ़कत आजाद की
शुम्मयेकिस्मत हमने कर लिया जिसपर यकीन
अपनी तो मिट्टी उसी कम्बख़्त ने बरबाद की
किस ग़जब का है मेरे शौक़े शहादत का असर
उड़ गया मुंह फीकी रंगत पड़ गई जल्लाद की

शहीदों के खूं का लहर देख लेना
मेरे दिल में क्या है असर देख लेना
सताले रहे मत कसर देख लेना
हमारी यों हस्ती मिटाने से पहिले
ज़रा अपनी हस्ती मगर देख लेना
गुनहगार हमको बताते हो अपने
गुनाहों पै भी यक नज़र देख लेना

दिखाते हो नाहक़ हमें मौतका डर
हथेली पै रक्खा है सर देख लेना
नहीं जेल की कुछ रही अब है परवाह
हर एक मर्द बस्ता कमर देख लेना
जहां अबतो कहते अमन है अमन है
भरा है वहां पर ज़हर देख लेना
ग़ुलामी का नामो निशा मेट देगी
शहीदों के ख़ूं का लहर देख लेना

हुवैदा आज अपने ज़ख़्म पिनहां करके छोड़ूंगा लहू रो रो करके महिफ़िल को गुलिस्तान करके छोड़ूंगा। दिखादूंगा मैं ऐ हिन्दुस्तां रंगे बफ़ा सबको। कि अपनी ज़िन्दागानी तुझ पै कुर्बां करके छोड़ूंगा। जलाना है मुझे हर शमां दिलको सोज़े पिनहां से। तेरे जुल्मत में मैं रोशन चिराग़ां करके छोड़ूंगा

अभी मुझ दिल जलेको हम सफ़ीरो और रोने दो कि मैं सारे चमन को शबनमस्तां करके छोड़ूंगा। उठा दूंगा नक़ाबे अरिज़े महबूब इक रंगी। तुझे इस ख़ाना जंगी पर परेशां करके छोड़ूंगा। इनकलाब आने को है।

जान तक कुर्बान है अपनी वतन के वास्ते
हम वह बुलबुल हैं कि मरते हैं चमन के वास्ते
ताज आज़ादी दिलायेंगे वह अपनी क़ौम को
क़ैदख़ाने में गये हैं जो वतन के वास्ते
सिल्क पैरिस की न इंगलिश मेड हमको चाहिये
कपड़े खद्दर के बनें दूल्हा दुलहन के वास्ते
माल देना अपनी आंखों में वही है कोई चीज़
जान देने की तमन्ना है वतन के वास्ते
हमें तो काल हैं हमें खद्दर से उल्फ़त क्यों नहो
कपड़े यूरुप के बनें गोरे बदन के वास्ते

बज़्मे हिन्दुस्तान में वह बे नक़ाब आने को है
सामने ज़र्रों का गोया आफ़ताब आने को है
वह गिरेगी बर्फ़ बन कर ख़िरमने अग़ियार पर
ख़ञ्जरे सूराज में जो आबो ताब आने को है
चौंक उठेंगे यक़ी है ख़ौफ़ से आदाए क़ौम
सामने आंखों के वह तस्वीरे ख़्वाब आने को है
लुत्फ़ तो जब है लगा दिल दे आग कसरेग़ैर में
यार के चेहरे प जो गेज़ो इताब आने को है
देखते ही देखते लन्दन के गुल कुम्हलायेंगे
गुल्शने यूरुप में बादे इनक़लाब आने को है

नक्शा तुम्हारे ज़ुल्म का मेरे जिगर में है
यह भी खुदा की शान है स्याही कमर में है
जो कुछ था पास मेरे वह सब तूने ले लिया
बतला तो ज़रा मुझको कि अब किस फ़िकर में हैं
आंखों में धूल झोंकेंगे वह अब हम हैं यह समझे

मक्रो फ़रेब उनका हमारी नज़र में है
होगा जहां में इसका न नामो निशान भी
इस दम तो तेग़ ज़ुल्म की तेरी कमर में है
चल सकती नहीं किश्ती हुकूमत की हिन्द में
तूफ़ां उठा है जोश का दरिया लहर में है
करते हैं इस तरीक़ से हम तै रहे स्वराज
सर उसके आस्तां पै कदम रहगुजर में है
हद हो चुकी है 'सरयू' गुलामी के दर्द की
दिल में जिगर में सीने में पहलू में सर में है

ये ग़फ़लत का अपनी समर देखते हैं
कि ग़ैरों के हाथों में घर देखते हैं
खटकते हैं कांटे के मानिन्द उनको
निकलते जो सैयाद पर देखते हैं
ज़माने में है उनकी चश्में इनायत
न हो इस तरफ़ यक नज़र देखते हैं

बढ़ा हिन्द में जोश हुब्बे वतन का
ये दरिया है फिर बाढ़ पर देखते हैं
बढ़े जंग में शेर दिल और बुज़दिल
इधर देखते हैं उधर देखते हैं

—

सब्रो सिकूं पै जुल्म का ख़ञ्जर नज़र आये
अमनो अमांके अहद में महशर नज़र आये
सोते से उछल पड़ते थे रोते खड़े खड़े
जिस वक्त़ उन्हें ख़्वाबमें क़ैसर नज़र आये
हमसा भी बद नसीब न होगा जहान में
अपने भी मुल्क में न हमें घर नज़र आये
हलवा व खीर पूड़ियां अग़ियार खा रहे
अपने लिये तो हमको न बेभ्भर नजर आये
सींचा था आंसुओं से शबो रोज जो चमन
"डायर"के मजालिम से वह बञ्जर नजर आये

जो मुल्क और क़ौम से खुदग़र्ज हों खिलाफ़
उनसा नमकहराम न बदतर नज़र आये
शर्मा समझलो हिन्द में होगा जभी स्वराज
हर कूचओ बजार में खद्दर नज़र आये

हुए सख्त हैं इम्तहां कैसे कैसे,
मिटे मुल्क पे नौजवां कैसे कैसे
नहीं हाय बेदर्द को रहम आया,
तड़पते रहे नीम जां कैसे कैसे
क़यामत कोई दिन में है होनेवाली,
कि उठते हैं फ़ितने यहां कैसे कैसे
मिले आज मयखाने में शेख़ जी थे
ये खुलते हैं राज़ निहां कैसे कैसे
हमारी वफ़ाओं पैभी उसको शक़है
हैं उस बदगुमा को गुमा कैसे कैसे
लिया छीन घर मेजबानों को अपने

यहां आते हैं मेहमां कैसे कैसे
है मुंह पर तो कुछ दिलमें है और ही कुछ
त्रिशूल अपने हैं मेहरबां कैसे कैसे

अहले वतन ने उम्र इसी में तमाम की
किस्मत में क्या लिखी है गुलामी गुलाम की
बे लुत्फ़ियों के साथ गुज़रती है ज़िन्दगी
की सुबह आफ़तों से तो मुश्किल से शामकी
देता है बुत कदे में अजां रोज़ बिरहमन
मसजिद में रट है शेख़ को भी राम २ की
इस बन्दगी से हाथ न आवेगा कुछ हमें
बंगलों पै अब नहीं है ज़रूरत सलाम की
किसका कुसूर है ये हमारा कुसूर है
हम खुद बनाये बैठे हैं सूरत गुलाम की

वादे वफ़ा किये नहीं तूने वतन के साथ
बिगड़ा है यक ज़माना तेरे चलन के साथ
शक तो यही था तूने किया दिल किसीका चाक
छींटे लगे हुये थे तेरे पैरहन के साथ
अश्कों की जगह खून की दामन पै थी झड़ी
आंखों को इश्क होगया गंगा जमन के साथ
चुन २ के फूल चुन लिये तूने हैं किस लिये
बदला यही चुकाना था गुलचीं चमन के साथ
क्या ख़ाक कर सकेगी कभी गोलियां तेरी
चर्खे को हम चलायेंगे मेशीन गन के साथ
जब शौक़ ही हुआ है कि जिन्दा में रहेंगे
वारंट भी तू भेजदे चाहे समन के साथ

खाने खराब कर दिया बिल्कुल शराब ने
जो कुछ कि न देखा था दिखाया शराब ने

बुलबुल की तरह बागमें लेते थे बूऐ गुल
सन्डास नालियों में गिराया शराब ने
हम पीनेवालों शरबते संदल थे दोस्तो
कुत्तों का मूत हमको पिलाया शराब ने
मैदानेजङ्ग में थे कभी हम भी सहसवार
कीचड़ की नालियों में गिराया शराब ने
पी कर के दूध घी रहते थे हम आजाद
अस्सी करोड़ रुपया खुवाया शराब ने

———

कांप उट्ठा चर्ख मेरी आह सोजां देख कर
आंख चुंधयाई कामर की दागतावां देखकर
आपके जब्रो तशद्दुद में अजब तासीर है
हंस पड़ेगा ज़ख्मदिल खंजर की उरियां देखकर
बेगुनाही का मेरे क़ातिल के दिलमें शक़ हुआ
आह की तासीर से खंजर को लरजा देखकर
हाथ में ज़ंज़ीर, बेड़ी पांव में गर्दन में तौक़

दम बखुद है हुर्रियत यह साज़ो सामां देखकर
दावरे महशर ने भी दी दाद मासूमी मुझे
.खून आलूदा मेरे क़ातिल का दामां देखकर

——

खुदा के हुक्मको भूले अगर तुम हुक्मरां बनकर
उड़ेगा दामने तर्जे हुकूमत धज्जियां बनकर
कहीं यह मत समझ लेना मैं बेकस हूं निहत्था हूं
उदूको ख़ाक़ कर देगीं यह आहें बिजलियां बनकर
सरज जाली के फंदे में हमें नाहक़ फंसाते हो
लिबासे खद्दरी है जेबे तन आबे रवां बनकर
बरोज़े हश्र होगा इसलिये दुशमन का मुंह काला
उजाड़ा गुलशने भारत को इसने बागवां बनकर
है जिनके दिलमें ऐ "सरयू" मुहब्बत मुल्क की उट्ठें
बगरना शौक़ से बैठो घरों में बीबियां बनकर

——

महात्मा गांधी जी की ११ शर्तें।

महात्मा गांधीकी ग्यारह शर्तें, अमलमें लाकर दिखाना होगा।
प्रजाके आगे तुझे, सितमगर! सर अपना अबतो झुकाना होगा॥

१ नशीलें चीज़ें शराब, गांजा, अफ़ीम आदिक जो बुद्धि हरतीं।
मिटाके इसको खराद- बिक्री दुकानें सारी उठाना होगा ॥
२ हमारे सिक्के की दर साहब! घटा-बढ़ा करके लूटते हो।
अब एक शिलिंग चार पेनो, हा भाव उसका बनाना होगा ॥
३ लगान आधा करो ज़मीं का, किसान जिससे ज़रा सुखी हों।
महकमा इसका हमारी कौंसिलके ताबे तुमको रखाना होगा ॥
४ फ़िज़ूल ख़र्ची, बिला ज़रूरत, जो फ़ौज़ पर हो रही हमारी।
अधिक नहीं तो आधा उसको, ज़रूर साहब! घटाना होगा ॥
५ बड़े-बड़े, भारी-भारी वेतन, डकारते हैं जो आला अफसर।
उसे मुआफिक लगान आधा या उससेभी कम कराना होगा ॥
६ स्वदेशी कपड़े करें तरक्की, विदेशी कपड़े न आने पावें।
विदेशी कपड़े पै और महसूल, ज़्यादा तुमको लगाना होगा ॥
७ समुद्र-तट का जहाज़ी बाणिज, न हाथ में हो विदेशियों के।
उसे हमारे महाजनों के अधीन होकर चलाना होगा ॥
८ जिन्हें कतल, या कतल इरादा, सजा मिली हो, उन्हें न छोड़ें।
बकाया कैदी पुलीटिकल सब, तुरन्त साहब छुड़ाना होगा ॥
९ उठा लिये आयें राजनैतिक जो मामले चल रहे मुल्क पर।
जो एकसौचौबीस दफा अलिफहै उसेतो बिल्कुल मिटानाहोगा ॥
अठारह का ऐक्ट रेगुलेशन, तथा दफा ऐसी सब उठाकर।
जिलावतन सब हमारे भाई, वतन में साहब! बुलाना होगा ॥
१०महकमा खुफिया पुलिसा उठादो, या करदो उसको प्रजाके ताबे
११हमें भी बंदूक और पिस्तौल, बरा हिफ़ाजत दिलाना होगा ॥
हमें सबर होगा बस उसी दम जब होंगी पूरी ये ग्यारह शर्तें।
सहे हैं ज़ुल्मो सितम हज़ारों न ज़्यादा हमको रुलाना होगा ॥